२

9 ✓ PG. BT. college
BT.I. ✓ college

GOVT. POLYTECHNIC
DURG, (M.P.)

प्रथम

(1) अस्तित्व के साथ शरीर अवयव मानवीयगुण, स्वभाव सम्बन्ध कर्तव्य आवश्यकता उपयोगिता एवं प्रयोजनीयता वादी शब्दों के साथ भाषा - अभय करुणा चाचा आदि

(2) अस्तित्व के सम्बन्ध वादी वाक्य रचनायें

अ - आदर करना
उ - उपकार करना
प हे प्यासे प्यार
वि: व. विश्वास से विश्वास

3 नोट - बच्चों में तादात्मता की संभावना अधिकाधिक होने के कारण जीव प्रकृति के साथ तादात्मता होने का प्रावधान आवश्यक है क्योंकि "मानव ज्ञानावस्था की इकाई है"

जीव और पदार्थावस्था व वनस्पति जगत को अविकसित प्रकृति के रूप में परिचय कराना आवश्यक है क्योंकि "यह वास्तविकता तथा यथार्थता है"

3) पुस्तिका आदि की सुरक्षा सदुपयोग को बोध सुलभ करना ~~तथा~~ उसका भी मूल्यांकन व्यवस्था का होना।

प्यार करने से प्यार ~~मिलता~~ है
~~धीरज मेरा गौरव है~~
हर अच्छे से अच्छे काम में धीरज मेरा गौरव है
हर बड़ों का आदर करना [illegible] है

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP: 1982-83

1) अ अनादि - अक्षर - अनंत - अभ्यास, अतिशय - अवसर

2) आधार, आरव, आशा, आकुल, आश्चर्य - आकर्षण, आदत

3) इ इन्द्रिय - इन्धन - इतिहास

4) ई ~~ईश्वर - ईख~~

5) उ - उधार उदय - उपाय

6 - ऊ

7 - ए एक -

8 - ऐ ऐश्वर्य

9 - ओ

10 - औ - औषधी

11 अं - अंगा - आंक

12 अः

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

द्वितीय

1) सम्बोधन के अर्थ में वर्तने वाली, अर्थात् स्नेह, विश्वास जैसी प्रयोजन वादी अर्थसंपन्न वाक्यरचना जैसा। माता प्यार से बुलाती, खिलाती सुलाती इत्यादि

(2) सम्बन्धों (के नाम वर्तने का) का पाठ जैसा — माता पिता, भाई बहन
संबन्धों के आधार पर पद्य या कवितायें
सम्भाषण।

3) पुस्तिका व सामग्रियों की सुरक्षा व सदुपयोग का प्रबोधन मूल्यांकन।

F3) [illegible]

1[illegible] – [illegible]

14 – [illegible]

15 – [illegible]

16 –

GOVT. POLYTECHNIC
DURG, (M.P.)

तृतीय

1) स्नेह, विश्वास कृतज्ञता जैसी मूल्यों का व्यवहार कारी वाक्यरचना ~~पाठ~~ जैसा साथी सहेलियों के साथ स्नेह व विश्वास की प्रतिष्ठा माता पिता गुरु जनों के प्रति कृतज्ञता की प्रतिष्ठा कारी वाक्य रचना

2) सम्बन्धों में वर्तनेवाली ~~पाठ~~ नैतिक मूल्य सम्पन्न पाठ

3) पुस्तिका सामग्री वस्त्र अलंकार क्रम और वस्तुओं के सदुपयोग का बोधक कार्य उसका भी मूल्यांकन

च - चाचा - चलना - चम्मच - चरण

ह - हवा - हल -

छ -

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP; 1982 - 83

GOVT. POLYTECHNIC चतुर्थ
DURG. (M.P.)

1) सम्बन्धों में वर्तने वाली व्यवहार कार्य मौसम- समय के साथ सेवा उसकी आवश्यकता

2) मूल्य, चरित्र और नैतिकता की अविभाज्यता उसका वर्तमानवादी प्रयोजन।

3) शिक्षा सामग्री, अलंकार सामग्री तथा सामग्रियों का सदुपयोग व सुरक्षा की बाध्यकारीयता है। और विद्यार्थियों के चरित्र में उसका मूल्यांकन।
(मानव होने की योग्यता का सर्टिफिकेट)

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP: 1982-83

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

पंचम

1) मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्यता वादी पाठ जैसा स्नेह विश्वासादि मूल्यानुभूति सहित (वादी चरित्र) विचार वादी संयमता और प्रत्येक अर्थका सदुपयोग सुरक्षा वादी

2) उत्पादन में उत्साह (दायित्व) वादी और व्यवहार के प्रति दायित्व वादी प्रबोधन

3) शिक्षा सामग्री उपकार सामग्री ~~कक्षा~~ व (श्रोता सदुपयोग सुरक्षा वादी ~~संरक्षण~~) शाला सामग्री, चरित्र संयमता संरक्षण उसका मूल्यांकन।

~~संयमता~~ कृतज्ञता व आचरण का मूल्यांकन

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP: 1982-83

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

पाठ्यक्रम ६ वीं

1) व्यवहार संचेतना सबमें अर्थात सभी मनुष्यों में विद्यमान होने का पाठ।

2) कर्तव्य तथा दायित्वों की पहचान स्वीकृति और वहन संचेतना का वैभव होने का सत्यता का प्रकाशन

3) शाला कक्षा शिक्षा एवं संस्कार ([illegible]) सामग्रियों की सुविधा सदुपयोग शाला से बाहर उनका प्रचार मित्र पैसा शाला से बाहर जाने के अनंतर बच्चों की गति विधि क्रिया को देखने में समझने में आना उन सब का मूल्यांकन

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

सप्तम (7) पाठ.

1) कर्तव्य दायित्व की पहिचान कारी और ~~सब~~ उसका चरित्र कारी पाठ

2) "देखना ही समझना समझना ही देखना" सिद्धान्त के आधार पर मूल्यों की पहिचान क्षमता संचेतनामे होने और उसीके आधारपर मूल्यांकन सफल होने की सत्यता का प्रबन्धन

3) परिवार से शाला सामग्रीयों का सदुपयोग व सुरक्षा का मार्गदर्शन उसका मूल्यांकन।

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP: 1982 – 83

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

अष्टम ८ वीं

1) मूल्यों का प्रकाशन तथा पहचान (समझदारी में) कालिये ही व्यवहार होने का पाठ

2) संचेतना में मूल्यों का अभिव्यक्त (अभिव्यक्त) करने की अभीप्सा जीने की सहजता ~~पूर्ण पाठ~~ का प्रबोधन / जैसा जीवन के समाधानात्मक संवेदनशील [illegible] सम्पूर्ण मानव व्यवहार होता है

3) गांव मोहल्ला ~~देश~~ राष्ट्रीय सामाजिक अलौकिक और अनुशासन, पारिवारीय, शालेय, अध्ययन सामग्रियों का सदुपयोग व सुरक्षा का मार्गदर्शन ~~मूल्य~~ विद्यार्थियों के चरित्र मूल्यांकन।

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP: 1982 – 83

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

नवम

1) जीवन मूल्य के अर्थ में ही अर्थात आनंद व प्रामाणिकता के अर्थ में ही मानव मूल्य व समाज मूल्य ~~का~~

1) सचेतना व निर्णय के अर्थ में समाधान के अर्थ में पाठ

2) जीवन मूल्य के अर्थ में ही अर्थात आनंद व प्रमाणिकता के अर्थ में मानव मूल्य समाज मूल्य प्रकाशन होने कि सत्यता का प्रबोधन।

3) शाला में और बाहर ~~का~~ कि चरित्र का मार्ग दर्शन मूल्यांकन।

GOVT. POLYTECHNIC
DURG, (M.P.)

दशम

1) मन मूल्य व समाज मूल्य ऐक्यकारी पाठ साथ ही ~~अध्ययन~~ आत्मसचेतना ही

2) ~~अवश्यक~~ समाज व राष्ट्र संचेतना का अविभाज्यता का, व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्र में सामरस्यता का द्रष्टा ज्ञाता कर्ता प्रवर्तक हो कि सत्यता का प्रकाशन

3) ज्ञान मन चेतनात्मक अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा अनुशासन का मार्गदर्शन मूल्यांकन।

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP: 1982 – 83

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

एकादश

जाग्रत सच्चेतना का व्यवहार स्वरूपात्मक आयाम

1) सामाजिक व राष्ट्रीय चरित्र कार्य पाठ
मौलिकमूल्य व मूल्यांकन वादी स ~~राष्ट्रीय~~
सामाजिक चरित्र, आर्थिक उत्पादन एवं उपयोग
पूर्वक आवर्तनशील अर्थचरित्र न्याय विनिमय
सुलभतावादी राष्ट्रीय चरित्र कार्य पाठ

2) प्रामाणिकता प्रमाण व समाधान
जीवन का वैभव समाज या राष्ट्र
का त्राण व प्राण होने का सत्यता
का प्रकाशन

3) वर्तमान समाज से सामरस्यात्मक
3 तनमनधनात्मक अर्थ का सदुपयोग/
योगदान सुरक्षात्मकता में मार्गदर्शन
मूल्यांकन

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

द्वादश

1) प्रमाणिकता के समाधानकारी चाह,

2) जागृत जीवन वैभव का प्रकाशन मानव संचेतना वादी जीवन मानवीयता पूर्ण व्यवहार कुशल होने की सत्यता का प्रकाशन।

3) तन मन धन नात्मक अर्थ की सदुपयोग सुरक्षा का मार्गदर्शन मूल्यांकन।

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP; 1982 – 83

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

त्रयोदश

1) जीवन जागृति कारी पाठ
~~व~~ जीव व्यवहार व योगाभ्यासीका पाठ

2) जीवन शक्तियोंका परावर्तन प्रत्यावर्तन क्रम का प्रयोजन

3) ~~*~~ अर्थका सदुपयोग व सुरक्षा ~~श्च~~
~~व~~ निम्न कक्षा के विद्यार्थियों को मूल्यांकन कराने की व्यवस्था और उसका मूल्यांकन

ए नागराज, प्रणेता एवं लेखक मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
www.madhyasth.org

पञ्चदश

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

1) जीवन शक्ति यों का परावर्तन तथा प्रत्यावर्तन
प्रमाणत्रय कार्यवाह स्वानुशासन: ~~स्थिति~~ ~~रूप~~ ~~है~~ ~~हैं~~

2) क्रियापूर्णता व आचरण पूर्णता ही जीवन व व्यवहार सफलता का त्राण व प्राण दोनों की सत्यता का प्रवर्तन

3) ~~अनुशासन~~ स्वानुशासन प्रकाशन मूल्यांकन।

संस्था को धन देना सहकर्मियों को सहयोग
बेसहाराओं को सहारा निःसहाय को सहाय
विपदा को सुधारना सुधारकों का साथ
अधिकार [illegible] सही [illegible]